खालसा का गीत

खालसा का गीत, एम.एस.एस. लिवतार सिंह खालसा द्वारा
कई लोग साहस की बात करते हैं। कहने से साहस नहीं मिलता।
मृत्यु के सामने ही हमें इसे जीना होता है।
जब हालात सबसे बुरे और अंधकारमय होते हैं, तभी हम सबसे ऊंचे खड़े होते हैं।
जब तक आखिरी तारा न गिर जाए, हम एक इंच भी पीछे नहीं हटेंगे!

खालसा की तरह खड़े रहो, लोहे की तरह मजबूत, पत्थर की तरह अटल।
अपना प्राण और प्राण, प्राण और श्वास, अपने प्राण और प्राण ईश्वर और गुरु को समर्पित करो।

गुरु अर्जुन ने सत्य के लिए खड़े रहने के लिए अपना प्राण दे दिए।
उन्हें पांच दिन और पांच रात तक जलाया और यातना दी गई।
वे किसी भी समय हार मानकर इसे रोक सकते थे।
उनकी शक्ति एक मजबूत दीवार की तरह थी, उन्होंने एक इंच भी पीछे नहीं हटे!

खालसा के पुत्रों, उन लोगों को याद करो जो शहीद हुए।
अपनी अंतिम सांस तक डटे रहे,
ताकि हम जो अब जीवित हैं, स्वतंत्र जीवन जी सकें।

एक राजकुमारी जन्म या रक्त से राजसी नहीं होती।

लेकिन अगर उसका परिवार आनंदपुर साहिब में बसता है,
तो वह ऐसे गरिमा और शक्ति के साथ चलेगी कि दुनिया विस्मय में झुक जाएगी।
जब तक पहाड़ गिर न जाएं, वह एक इंच भी पीछे नहीं हटेगी!

खालसा की पुत्रियों, तुम्हारे बल में ही हमारा भविष्य निहित है।
हमारे बच्चों को निडर मन दो, ताकि वे गुरु की दृष्टि से संसार को देख सकें।

बैसाखी को हम हजारों थे, लेकिन केवल पांच में ही मरने का साहस था।
फिर एक वीर पुरुष, एक चमकती तलवार ने हम सबको शेर बना दिया।
और अब हम उनकी विरासत को जी रहे हैं, गिरने से पहले मरना।

और उन पाँचों की तरह जिन्होंने पुकार का जवाब दिया, हम पीछे नहीं हट सकते।

खालसा बनकर खड़े रहो, लोहे की तरह मजबूत, पत्थर की तरह अटल।
अपना जीवन ईश्वर और गुरु को समर्पित करो, मन और आत्मा, श्वास और अस्थि।

दसवें गुरु ने खालसा को जीवन देने के लिए अपने पुत्रों का भी बलिदान दिया।
उनके वचन समय की हवाओं के सामने पहाड़ों की तरह खड़े हैं,
कि खालसा दुनिया पर राज करेगा, सब उसकी शरण में सुरक्षित रहेंगे।
लेकिन अगर खालसा का पतन हुआ, तो दुनिया का अस्तित्व ही नहीं रहेगा!

खालसा बनकर खड़े रहो, लोहे की तरह मजबूत, पत्थर की तरह अटल।
अपना जीवन ईश्वर और गुरु को समर्पित करो, मन और आत्मा, श्वास और अस्थि।

कई लोग साहस की बात करते हैं। कहने से साहस नहीं मिलता।
मृत्यु का सामना करके ही हमें उसे जीना होगा।
जब हालात सबसे बुरे और अंधकारमय होते हैं, तभी हम सबसे ऊंचे खड़े होते हैं।
जब तक आखिरी तारा नहीं गिर जाता, हम एक इंच भी पीछे नहीं हटेंगे!

खालसा बनकर खड़े रहो, लोहे की तरह मजबूत, पत्थर की तरह अटल।

अपना जीवन, मन और आत्मा, श्वास और अस्थि, ईश्वर और गुरु को समर्पित करें।

खालसा के पुत्रों, उन शहीदों को याद करो।
वे अपनी अंतिम सांस तक दृढ़ रहे, ताकि हम, जो अब जीवित हैं, स्वतंत्र जीवन जी सकें।

खालसा की पुत्रियों, हमारी शक्ति में ही हमारा भविष्य निहित है।
हमारे बच्चों को निर्भीक मन दें, ताकि वे गुरु की दृष्टि से संसार को देख सकें।

खालसा की तरह दृढ़ रहें, इस्पात के समान मजबूत, पत्थर के समान अडिग।
अपना जीवन, मन और आत्मा, श्वास और अस्थि, ईश्वर और गुरु को समर्पित करें।
मन और आत्मा केवल उन्हीं के हैं।

AI की मदद से अनुवादित